Minor research project submitted to UGC by Dr. Mukunda Prabhu, Dept. of Hindi

Tittle: anthim dashak (2001-2010) ke Hindi upnayasome me rashtravada aur visha vadh

UGC reference Number: MRP (H)0804/13-14/KAMA002/UGC-SWRO

अंतिम दशक (2001–2010) के हिन्दी उपन्यासों में

राष्ट्रवाद एवं विश्ववाद

मानव सामाजिक प्राणी है । समय एवं युगानुसार उसकी सामाजिकता में परिवर्तन आता है । कुछ परिवर्तन बिना आवाज़ या हल–चल से होते हैं तो कुछ परिवर्तन बड़ी हल–चल एवं आवाज़ों के साथ घटित होती है । परिवर्तन अनिवार्य एवं निरंतर है । पुराने जमाने में यह सब बहुत मंद गती से घटित होता था । लेकिन विज्ञान एवं तंत्रज्ञान की तरक्की एवं जनसंचार माध्यमों के कारण आज परिवर्तन दिन दूनी रात चौगुनी रफ्तार से चल रहा है । इस लघु–शोध प्रबंध में राष्ट्रवाद एवं विश्ववाद पर चर्चा की गयी है । 'वैश्वीकरण' या खगोलीकरण' ने दुनिया को एक गाँव में समेट लिया । जिसके परिणाम स्वरूप संसार भर के नीति–नियमों आहार–विहार, एवं सोच–विचार में अमूलाग्रह परिवर्तन आया । सारा समाज बदल गया । राष्ट्र से संबंधित अवधारणाएँ एवं विश्वमानवता की प्रकारों में भी परिवर्तन दिखायी देने लगा । इन पर प्रकाश डालने की एवं उनके परिणामों पर संकेत करने का प्रयास यहाँ पर किया गया है । अंतिम दशक के कुछ महत्वपूर्ण उपन्यासकारों का संक्षिप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रथम अध्याय में प्रकाश डाला है । देशी एवं विदेशी संस्कृति पर भरसक लिखनेवाले निर्मल वर्माजी, मुस्लिम परिवारों की सामाजिक स्थितिगतियों पर जीता जागता चित्रण देनेवाले, राही मासुम रज़ा एवं अब्दुल बिस्मिल्लाह, स्त्री शोषण एवं स्त्रीयों पर होनेवाली बदू

सलूखी एवं अत्याचारों का पर्दाफाश करने वाली उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्गल, अलका सारावगी, मधु कांकरिया एवं दलितों की दयनीय स्थिति एवं समानता के पक्षपाति मोहनदास नैमिशराय आदि पर इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है ।

द्वितीय अध्याय में राष्ट्र एवं राष्ट्रीय एकता की परिभाषा, उद्भव आज के भारतीय नागरिकों की चिंतन प्रणाली, बदलते हुए परिवेश में राष्ट्रवाद और विश्ववाद, राष्ट्रवाद संबंधि वर्तमान अवधारणाओं पर प्रकाश डाला गया है ।

राष्ट्रवाद पर आज पुनर्विचार एवं चिंतन चल रहा है । इस विषय में अनेक विवाद भी खड़े हुए हैं । एक ओर राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम में कमी है तो दूसरी ओर विभाजक ताकते राष्ट्रीयता पर प्रहार कर रही है । देशों के अनसुनी मामलों के कारण टकराव पैदा हुआ है । कुछ राष्ट्रों में अपने अस्तित्व पर ही सावालिया निशान उठ खड़ा हुआ है । इन सब मामलों पर चर्चा इस अध्याय में की गयी है ।

तृतीय अध्याय के अंतर्गत अंतिम दशक के मुख्य उपन्यासों में राष्ट्रवाद और विश्ववाद पर अनुसंधान किया गया है । राष्ट्रीयता या राष्ट्रप्रेम का मतलब कोई कोरा बौद्धिक वाद नहीं देश के नागरिकों को समान तरक्की का सुअवसर उपलब्ध होने से एकता एवं भाईचारा का मौसम अपने आप उभरता है । उपन्यासकारों ने स्त्री–शोषण, छुआछूत, धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, बेरोजगारी, बाज़ारवाद, आदि पर प्रकाश डालते यह बताया है कि राष्ट्रीयता की नीव सुदृढ़ बनाने इन समस्याओं का हल करना जरूरी है । वैश्वीकरण के सिलसिले में अन्य देशों के साथ आदान प्रदान के कारण

युवा पीढ़ी उद्वेग में हैं, वह रास्ता भटक रही है । तुरंत एवं आसानी के रास्तों पर गुजरकर कामियाबी हासिल करने की इच्छाएँ क्षणिक है । आधुनिकता के अंधानुकरण ने नशेबाजी, चोरबाजार, कालधन, घूसखोरी को बढ़ावा दिया है । इन सब समस्याओं पर चर्चा इस समय के उपन्यासों में हुई है । गाँवों से शहरों की ओर लोगों का पलायन, कृषि संस्कृति का ह्रास, अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत नारी, अल्पसंख्याक एवं बहुसंख्याकों के बीच बढ़ती कंदरा आदि राष्ट्रीय ऐक्य एवं राष्ट्रीयता के लिए बाधक है । कमलेश्वर का 'एक ओर चंद्रकांता', चंद्रकांता का 'कथासतीहर', उषा प्रियंवदा का 'अंतरवासी', राही मासूम रज़ा का 'नीम का पेड़', मधु कंकरिया का 'सलाम आखिरी', 'सेज पर संस्कृति', 'पत्ताखोर', चित्रा मुद्गल का 'गिलिगडु', अब्दुल विस्मिल्लाह का 'अपवित्र आख्यान', मैत्रेयी पुष्पा का 'अल्मा कबूतरी', 'कस्तूरि कुण्डली बसै', 'इदन्नमम्', 'गुडिया भीतर गुडिया', 'कई ईसुरी फाग', मोहनदास नैमिशराय का 'वीरांगना', 'झलकारी बाई' और 'आज बाज़ार बंद है' जैसे उपन्यासों में खगोलीकरण के बाद का भारत संपूर्ण ढंग से उजागर हुआ है । उपन्यासकारों ने अन्याय असमानता एवं भेद भाव के विरुद्ध आवाज बुलंद करके राष्ट्रीयता को खायम बनाने की कोशिश की है । अनेक उपन्यासों के पात्र ऐसे हैं जो अन्याय एवं अत्याचार के विरुद्ध लड़ते हिम्मत हारे बिना अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं जो आज की युवा पीढ़ी के लिए आदर्शप्राय हैं । इस दशक के उपन्यासकारों ने आधुनिक भारतीय समाज की दकियानूसी जीवन के साथ साथ विश्व के साथ अपने को डालती युव पीढ़ी का उल्लेख करके राष्ट्रवाद विश्ववाद दोनों की पुष्टि की है ।

इस लधु शोध अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में चौथ अध्याय है । उस दशक के उपन्यासकार एवं उपन्यास का मुख्य मंतव्य पर प्रकाश डाला गया । कालानुसार आदर्शों में बदलाव एक सामाजिक जीवन के परिवर्तनों पर इन उपन्यासों में प्रकाश डालते राष्ट्रीय ऐक्यता के साधक एवं बाधक विचारों पर एवं विश्वमानवता तथा विश्व भ्रातृत्व पर बल दिया गया है ।